International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 721-724

शिक्षा में भक्त फूलसिंह का योगदान

Ravita Rani
Research Scholar, Department of History, NIILM University, Kaithal, Haryana, India

प्रस्तावना

भारत पर अंग्रेजों का अधिकार था, हरियाणा क्षेत्र भी उनके अधिपत्य से बच ना सका। इस क्षेत्र में शिक्षा की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। उच्च शिक्षा का तो कोई प्रबंध था ही नहीं। 1900ई. तक शिक्षा की स्थिति अत्यंत दयनीय रही है। यहां जरूरत के हिसाब से कॉलेज व स्कूलों की संख्या बहुत कम रही है। स्त्री शिक्षा तो और भी बुरी स्थिति में रही है। यहां तहसीलदारी व हलकाबंदी स्कूल बनाए गए। इन सब स्कूलों में पढ़ाई अपने–2 ढंग से प्रदान की जाती थी। 20वीं शताब्दी में आने के बाद स्कूलों में थोड़ा सा सुधार हुआ। लोगों ने भी शिक्षा के महत्त्व को जानना शुरू किया। सरकार ने भी शिक्षा को अनिवार्य माना। 1926–27 तक शहरी क्षेत्रों में 6 और ग्रामीण क्षेत्रों में 148 स्कूल थे। 1934–35ई. में शहरी क्षेत्रों में 24 व ग्रामीण क्षेत्रों में 880 नए स्कूल थे।
1935 तक की अनिवार्य शिक्षा की प्रगति तालिका 1.1 में दर्शाई गई है।

तालिका 1.1: अनिवार्य शिक्षा की प्रगति

वर्ष	शहरी क्षेत्र	ग्रामीण क्षेत्र
1922–23	–	6
1926–27	6	148
1931–32	20	900
1934–35	24	880

उस समय आर्य समाज आंदोलन भी अपने चरम पर था। शिक्षा में येागदान देने के लिए आर्य समाज ने भी अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने अनेक स्कूल, पाठशाला, कॉलेज, महाविद्यालय, डी.ए.वी. हाई स्कूल, कन्या प्राइमरी व कन्या हाई स्कूलों की स्थापना की थी।
इसी प्रकार हरियाणा के आर्य समाज ने अनेक गुरूकुलों की स्थापना की। जिनमें लड़कों व लड़कियों के लिए कन्या गुरूकुलों की स्थापना की गई थी। शिक्षा को व्यापक बनाने के लिए अपने–अपने ढंग से इन संस्थाओं में शिक्षा प्रदान की जाती थी। किसी भी क्षेत्र का विकास नारी शिक्षा के बिना अधूरा है। नारी शिक्षा की स्थिति तो बहुत ही दयनीय थी। 1870 से 71 में लड़कियों के लिए अंबाला में 9 स्कूल थे। 1900 ई. तक ये केवल 4 ही बच गए। छात्राओं के अभाव में ये स्कूल बंद कर दिए गए। 1900 ई. तक हरियाणा में लड़कियों की खातिर एक भी हाई स्कूल नहीं था। 1911ई. में रोहतक में कुल एक 1921 तक 7 व 1931ई. तक 16 स्कूल थे। अन्य जिलों को देखते हुए रोहतक में हाई स्कूलों की स्थिति अच्छी थी। रोहतक व गुडगांव में आर्य समाज की स्थिति मजबूत थी। आर्य समाज ने शिक्षा का बढ़ावा देने के लिए यथासंभव प्रयास किए थे। इस शोध पत्र में हम शिक्षा में भक्त फूलसिंह के योगदान की अन्वेषणा पर विचार करेगें।

साहित्य सर्वेक्षण

यादव के.सी. (2013) का हरियाणा का इतिहास में उद्धेश्य था कि हरियाणा की स्थिति और शैक्षणिक स्थिति 19वीं व 20वीं शताब्दी में क्या थी किस प्रगति से शिक्षा का विस्तार हरियाणा में था।
विद्यामार्तण्ड बी. (1996) का श्री भक्त फूलसिंह का जीवन चरित्र में उद्धेश्य है कि आर्य समाज में प्रविष्ट होने के बाद भक्त जी ने पूर्ण रूप से अपना जीवन सामाजिक व शैक्षणिक कार्यों में लगा दिया। शिक्षा क्षेत्र में अपना ऐसा योगदान दिया जो समाज में स्मरणीय है उसे भूलाया नहीं जा सकता।
सिंह आर (1976) हरियाणा के आर्य समाज का उद्धेश्य भी यही है। समाज में अनेक समाज सुधारकों ने योगदान दिया। उनमें अग्रिण पंक्ति में थे भक्त फूलसिंह।
रानी आर (2017) भक्त फूल सिंह सामाजिक योगदान व बलिदान में भी इसी प्रकार की बात कही गई है। अतः भक्त फूल सिंह आर्य समाज के प्रणेता थे। उसी के अनुरूप जीवन यापन किया और समाज में उच्च स्तर पर अपना योगदान जीवन पर्यन्त तक दिया। उनका जीवन अनुसरणीय था। अतः समाज में उन्होनें पुरूषों को ही नहीं नारी को भी सशक्त बनाया और पुरूषों के बराबर का दर्जा दिलाने की चेष्टा की। शिक्षा के माध्यम से समाज को उच्च शिखर पर पहुंचाने में अपना योगदान दिया।

अध्ययन के उद्धेश्य

1. शिक्षा में भक्त फूल सिंह के योगदान को बतलाना।
2. भैंसवाल गुरूकुल और कन्या गुरूकुल खानपुर कलां का विश्लेषण करना।

शोध प्रणाली

आँकड़े संचय पद्धति

इसमें प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया है। 19वीं शताब्दी के अन्त से लेकर 20वीं शताब्दी तक की शिक्षा का अध्ययन करूंगी।

नमूना प्रारूप

शोध पत्र को देखते हुए मैंने सहूलियत प्रतिचयन व नियतांश प्रतिचयन का प्रयोग किया है।

आँकड़े विश्लेषण

इसमें ऐतिहासिक अनुसंधान का प्रयोग किया गया है।

विवरण

भक्त फूल सिंह 20वीं शताब्दी के महान समाज सुधारक व शैक्षणिक कार्यो के नायक थे। शिक्षा के क्षेत्र में आर्थिक अभावों के होते हुए उन्होनें जो कदम उठाया वो बहुत सराहनीय है। उन्होनें भैंसवाल व

खानपुर कलां गांव के जंगल में मंगल करके दिखा दिया। समाज को सशक्त बनाने के लिए भारत सरकार व राज्य सरकारें अनेक योजनाएं चलाती हैं। भक्त फूल सिंह ने तो समाज में सशक्तीकरण का बीज उस समय बोया जब हर तरफ अमंगल और निराशाएं थी। भक्त फूल सिंह ने अपनी पूरी निष्ठा व लग्न से बुलंद पताका को लहराया। शिक्षा के क्षेत्र में गुरूकुलों की स्थापना करके उन्होनें सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए अपनी भूमिका अदा की। ये वो योगदान है जिनका कर्ज कभी चुकाया नहीं जा सकता। महान शिक्षाविद राष्ट्र धर्म के रखवाले भक्त फूल सिंह को कोटिशः नमन उनके बारे में ये पंक्तियां उपर्युक्त हैं–

संकट की घड़ियों में ये आकाश के चाँद सितारे।
तेरा आह्वान किया करेगें अपनी भुजा पसारे।
जब तक रहेगें चाँद सितारे, बहेगी हिमगिरि से गंगा की पावन धारा।
तब तक अमर रहेगा भक्त फूल सिंह जी प्रेरक नाम तुम्हारा।।

शिक्षा की स्थिति

1857 ई. के बाद शिक्षा की स्थिति काफी दयनीय थी। माध्यमिक व उच्च शिक्षा का विस्तार हो रहा था लेकिन प्राथमिक शिक्षा काफी निराशाजनक स्थिति में थी। शिक्षा की प्रगति में वित का प्रबंधन भी दो उपायों से किया गया। एक तो गांवों से कर उगाहाया गया दूसरा नगरपालिकाओं पर खर्च की जिम्मेदारी डाली गयी। इससे भी शिक्षा की प्रगति संभव नहीं हो सकी।

1881–82 में प्राथमिक शिक्षा पर सरकार का हिस्सा केवल 16.17 लाख था जबकि कुल खर्च 70 लाख था। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति शोचनीय थी। 1901–02 में प्राथमिक शिक्षा पर 16.92 लाख रू. खर्च किया गया था। 1901–02 में पुरूषों की साक्षरता अनुपात को देखा जाए तो यह 10 प्रतिशत और स्त्रियों का 7 प्रतिशत था। ब्रिटिश शासन के दौरान शिक्षा बुरी तरह से पिछड़ चुकी थी। भारतीय शिक्षा प्रणाली गुरूकुल परंपरा थी। अतः आधुनिक ब्रिटिश शिक्षा भारतीयों को उनके मूल चेतन से उनको अलग करने की चेष्टा कर रही थी। जिससे भारतीय जनता छलावे में फंसती जा रही थी। 1904 में विश्वविद्यालय एक्ट लागू किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के लिए नियम बनाने का भार सरकार को दिया गया। सरकार नियम बना सकती थी उन्हें बदल सकती थी तथा बनाए गए नियमों को नामंजूर भी कर सकती थी। इस पर विधान परिषद् में गोखले ने अपने विचारों को रखा– इस देश का पढ़ा लिखा वर्ग इस कानून के विरूद्ध है। इस कानून से विश्वविद्यालयों की प्रबंध समितियों का पुनर्निर्माण होगा जो कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय उद्योगों के विरूद्ध पड़ेगा और कितना लाभ होगा यह भी विवादास्पद है लेकिन जो हानि होगी वह बिल्कुल स्पष्ट है निश्चित है। हम पर केवल संकीर्ण विचारों के खर्चीले विशेषज्ञों का शासन हमेशा के लिए लादा जाएगा।

भारत में उस समय सात प्रकार के स्कूल थे जिनको हम देशज बोलते हैं– चटशाला, पाठशाला, धर्मशाला, मकतब, मस्जिद स्कूल, गुरूमुखी शाला, स्कूल कुछ विद्यार्थी दो–चार साल ही इन स्कूलों में पढ़ते थे। ताकि वे थोड़ा बहुत पढ़ लिख सकें। इन स्कूलों में अलग–2 विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

1911 से 1947ई. तक माध्यमिक शिक्षा की प्रगति का वर्णन तालिका 1.2 में दर्शाया गया है–

तालिका 1.2: माध्यमिक शिक्षा की प्रगति 1911 से 1947ई. तक

जिला	स्कूल	1911	1921	1931	1941	1947
गुड़गांव	हाई	1	4	6	10	12
अम्बाला	हाई	7	9	12	16	18
करनाल	हाई	1	7	10	15	18
रोहतक	हाई	1	7	16	20	23

आर्य समाज व उनके कार्यकर्ताओं की लगन से हरियाणा के रोहतक जिले की स्थिति अन्य जिलों से कुछ ठीक थी अतः नारी शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया गया। भक्त फूल सिंह नारी शिक्षा की स्थिति को सुधारने वाले प्रकाश पुंज थे। जिन्होनें नारी शिक्षा के लिए व लड़कों की शिक्षा के लिए भैंसवाल गुरूकुल (1919) और कन्या गुरूकुल खानपुर कलां (1936) की स्थापना की थी। उस समय आर्थिक अभावों के होते हुए शिक्षा के बारे में इतना सोचना अपने आप में अनूठी मिसाल थी। आज भारत सरकार ने जो अभियान 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' 22 जनवरी 2015 की शुरूआत पानीपत से की। वो अभियान एक तरह से भक्त फूल सिंह के दिमाग की उपज नजर आता है जिसकी शुरूआत भक्त जी ने कन्या गुरूकुल खानपुर कलां की नींव 1936 में रखकर तीन छात्राओं से शुरू की थी। उन्होनें समाज को प्रकाशमय बनाया।

जीवन परिचय

भक्त फूल सिंह का जन्म 24 फरवरी 1885 को हरियाणा के सोनीपत जिले में जुआँ के पास माहरा गावं में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमति तारा देवी और पिता का नाम श्री बाबर था। इनके बचपन का नाम हरफूल था। इन्होनें आठवीं कक्षा खरखौदा से पास की यहीं से इनका नाम फूल सिंह हो गया। आठवीं के बाद इन्होनें खलीला से पटवारी की तैयारी की और पटवारी की परीक्षा अच्छे अंकों से पास की थी। 1904 में ये पटवारी पद पर नियुक्त हो गए थे। इनका विवाह 20 वर्ष की आयु में लक्ष्मी देवी खरब के साथ नारा गांव (पानीपत) में कर दिया गया। 1914 में ये सुभाषिणी नामक बेटी के पिता बने। इनकी बेटी ढाई वर्ष की होते ही इनकी पत्नी की मृत्यु हो गई। 1917 में इनके भाई की भी मृत्यु हो गई। अतः उनकी पत्नी श्रीमति धूपकौर के साथ इनका पुर्नविवाह कर दिया गया था। 1918 में ये गुणवती नामक दूसरी बेटी के पिता बन गए। 1907 में ये अपने मित्र पटवारी प्रीत सिंह के साथ आर्य समाज के उत्सव में गए यहीं से इनके जीवन में परिवर्तन हो गया। 1910 में पानीपत के आर्य समाज उत्सव में इनको यज्ञोपवीत (जनेऊ) स्वामी ब्रह्मानन्द के द्वारा प्रदान किया गया। यहीं से इन्होनें मांसाहार का त्याग, रिश्वत का त्याग, शराब का त्याग, का सामाजिक कार्यों में लग गए। 1918 में तो इन्होनें सामाजिक कार्यों के लिए नौकरी से भी त्याग पत्र दे दिया था। अन्ततः 14 अगस्त 1942ई. को रात्री के 9 बजे खानपुर गुरूकुल में भक्त जी को चार यवनों द्वारा शहीद कर दिया गया।

शैक्षणिक कार्यों में योगदान

भैंसवाल गुरूकुल पृष्ठभूमि

पटवारी का पद त्याग देने के बाद उन्होनें गहन चिंतन किया। शिक्षा के द्वारा ही गांव के बच्चों का उद्धार करने की सोची। इनके मन में आर्य नवयुवक विद्यालय खोलने की बात आई। इन्होनें अपने विचार स्वामी ब्रह्मानन्द के सामने व्यक्त किए। स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने इनको गुरूकुल खोलने के लिए कहा ताकि छोटे–2 छात्रों को

अपने अनुरूप तैयार करके सामाजिक कार्यों में लगाया जा सके। अतः यह बात भक्त फूल सिंह ने सिर आंखों पर ली। गुरूकुल खोलने के लिए ये अनेक स्थानों और गांवों में धूमे। घूमते–2 ये आंवली गांव में पहुंचे। वहां पंचायती गणेशीराम के भतीजे बलदेव के जन्मदिन समारोह पर हरियाणा के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति वहां मौजूद थे। उनके सामने भक्त जी ने अपनी बात रखी कि मैं हरियाणा में गुरूकुल खोलना चाहता हूं और मुझे उसके लिए उत्तम स्थान चाहिए ताकि मैं हरियाणा के बालकों को आर्य बना सकूं। सभी आर्य आपसे प्रभावित हुए और उन्होनें कहा समारोह के बाद वे अपने बड़े गांव भैंसवाल में आपके साथ चलेगें।

भैंसवाल गुरूकुल की स्थापना

भैंसवाल पहुंचने के बाद भक्त जी ने कहा कि– आपके गांव भैंसवाल के जंगल में मैं गुरूकुल खोलना चाहता हूं। सब भाई मिलकर भूमिदान करें ताकि हरियाणा का मंगल हो सके। जो लोग जंगल भूमि को जोतते थे उन्होनें उसका विरोध किया। भक्त जी ने अनशन धारण कर लिया। गांव के लोगों ने अपने भाई चारे को मनाया और भक्त जी के पास जाकर कहा कि– हम भूमि दान के साथ–2 आपको रूपये भी देगें। हम पर दया करो और अपना अनशन खोल लो। अतः भक्त जी ने गुरूकुल खोलने का स्थान चुना और अनशन भी खोल लिया। आंवली ग्राम के भूमि के साथ लगती भूमि पर 1920ई. में स्वामी श्रद्धानन्द जी के कर कमलों द्वारा भैंसवाल गुरूकुल की आधारशिला रखवाई गई। आर्य बन्धुओं के द्वारा वैदिक धर्म की जय स्वामी श्रद्धानन्द की जय, ऋषि दयानन्द की जय, आदि जय घोष की।

स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्य जनता को उपदेश दिया, जो इस मंत्र से शुरू किया–

मंत्र – उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत।

मेरे प्रिय आर्य बंधुओ! मैं वैदिक धर्म में आपके प्रेम व भक्ति को देखकर आनन्द विभोर हूं। बालकों की उत्तम शिक्षा के लिए पहाड़ों तथा नदियों का स्थान सर्वोत्तम हेाता है। यद्यपि यहां न तो पहाड़ हैं, न कोई नदी है फिर भी यहां का वातावरण शांत व एकांत है। हरियाणे का पुरूष स्वभाव से वेदानुयायी है। यहां मांस, मदिरा के दर्शन नहीं होते। घी, दूध दही की यहां नदियां बहती हैं। यह प्रांत ऋषि भूमि कहा गया है। यहां के मनुष्य नेकनीयत और आचारवान हैं। मैं आपको भरोसा दिलाता हूं यहां से गौतम, कणाद और कपिल से विद्वान पढ़कर निकलेगें। आप इस महान कार्य को पूर्ण कर सकेगें। प्रभु आपको शक्ति दे, बुद्धि दे। यही मेरा आप सबको आशीर्वाद है। वेद मंत्रों के उच्चारण करते हुए गुरूकुल की आधारशिला का पत्थर स्थापित कर दिया। ग्रामीण टोकणियों में दूध भरकर लाए थे। सभी उपस्थित लोगों को दूध पिलाया गया। बहुत सारा दूध बच भी गया। इस प्रकार 1920ई. में भैंसवाल गुरूकुल की आधारशिला को सहर्ष धूमधाम से स्थापित किया गया। अतः यह गुरूकुल 50 बालकों से आरम्भ किया गया था। इन ब्रह्मचारियों को पीली धोती पहनाई गई थी। इनका वेदारम्भ स्वामी श्रद्धानन्द जी ने करवाया था। विधि पण्डित स्वामी ब्रह्मानन्द जी थे। ब्रह्मचारियों से कोई फीस नहीं ली जाती थी। ब्रह्मचारियों को सबुह ''उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरन्निबोधत'' मंत्र (ध्वनि) से उठाया जाता था। अर्थात ''उठो जाग जाओ और ज्ञान को प्राप्त करो।''

कन्या गुरूकुल खानपुर कलां पृष्ठभूमि

1928ई. में हरियाणा में अकाल पड़ने के कारण त्राहि–त्राहि मची हुई थी। पशुओं के लिए चारा नहीं था, वृक्षों के पत्ते खिलाए जाते थे। गांव के किसानों व मजदूरों की दशा बड़ी दयनीय थी। गांव के लोग चंदा जुटाने में असमर्थ से थे। चंदे के सहारे चलने वाली संस्थाएं लड़खड़ा रही थी।

भक्त जी से नारी की स्थिति भी देखी नहीं जा रही थी। उन्होनें अपनी गुरूकुल कमेटी के सामने कन्या पाठशाला खोलने का विचार प्रस्तुत किया। पूरी कमेटी ने उनके विचारों का विरोध किया। फिर भी भक्त फूल सिंह ने खानपुर कलां के लोगों से कन्या गुरूकुल के लिए भूमि मांगी। अतः भक्त जी की इच्छा का मान रखते हुए 13 बीघे जमीन दान में दी गई। अतः 1936ई. में वट वृक्ष के नीचे (उसके समीप एक सरोवर) 1936ई. में कन्या पाठशाला की शुरूआत की गई। 13 बीघे जमीन सिद्ध महात्मा की मढ़ी के नाम दी गई थी। साधु रूपराम का 1927 में देहावसान होने के बाद ही भक्त जी ने उनकी जमीन पर खानपुर के लोगों से बातचीत करके यहां भैंसवाल गुरूकुल के विद्यार्थियों के लिए गौशाला का निर्माण किया था। ताकि ब्रह्मचारियों के लिए दूध की व्यवस्था हो सके। 1930 में माता धूप कौर भक्त जी की पत्नी स्थाई रूप से गौशाला में आकर रहने लग गई थी। आज भी यहां सिद्ध बाबा की मढ़ी बनी हुई है। इस स्थान को गौशाला के नाम से पुकारा जाता है।

कन्या गुरूकुल खानपुर कलां की स्थापना

1936ई. में सिद्ध बाबा की जमीन पर ही कन्या गुरूकुल खानपुर कलां की शुरूआत की गई। इस पाठशाला में प्रवेश लेने वाली सर्वप्रथम तीन छात्राएं थी। कुन्ती, गार्गी व गुणवती (भक्त जी की पुत्री)। भक्त जी ने घर–2 जाकर लोगों को बेटी की शिक्षा के महत्त्व को समझाया। धीरे–2 इस पाठशाला में 17 छोटी–छोटी बालिकाएं प्रविष्ट हुई। चंदे आदि से धन इकट्ठा करके उनको पुस्तकें दी जाती थी। अतः आज पाठशाला से कन्या गुरूकुल बना और कन्या गुरूकुल से विश्वविद्यालय का रूप इस संस्थान को मिल चुका है। आज यहां नर्सरी से पी.एच.डी. तक की शिक्षा प्रदान की जाती है।

निष्कर्ष

भक्त फूल सिंह जी ने अपना पूरा जीवन सामाजिक कार्यों और आर्य समाज की सेवा में अर्पित कर दिया था। उन्होनें समाज को उच्च शिखर पर लाने के लिए गुरूकुल भैंसवाल कलां और कन्या गुरूकुल खानपुर कलां की स्थापना की। उन्होनें समाज ने पुरूष और नारी के महत्त्व को बराबर का दर्जा दिया। 14 अगस्त 1942 उनके बलिदानी दिवस का हरियाणा के समाज में बड़ा महत्त्व है। भक्त जी के बलिदान के रूप में पंक्तियां इस प्रकार हैं–

1. भक्त जी का अद्भुत बलिदान धरती हो गई लहुलुहान।
   गूंजे धरती और वितान, वीरों की कैसी है शान।।
2. भक्त जी बलिदानी योद्धा, जीवन भेंट चढ़ा गए।
   तन–मन–धन सर्वस्व लुटाकर, ऊँचे कर्म कमा गए।।

भक्त जी आर्य समाज के नियमों के अनुरूप जीवन यापन करते रहे और उन्हीं के नियमों के अनुरूप जीवन पर्यन्त तक कार्य किया। उनका सामाजिक, शैक्षणिक योगदान अतुलनीय था। भक्त जी भविष्य के दृष्टता थे। मानव सेवा में उन्होनें अपना पूरा जीवन लगाया और अन्त में शहीद हो गए। भक्त फूल सिंह जी परिश्रमी, साहसी, निर्भक, अडिग, उत्साही, त्यागी व तपस्वी थे। वे वैदिक संस्कृति के प्रति आस्थावान थे। ऐसी अदभुत, अद्वितीय और बहुमुखी प्रतिभा समाज में कभी–2 जन्म लेती है। उनका पूरा जीवन प्रेरणा का स्रोत है। हर व्यक्ति को उनका अनुसरण करना चाहिए ताकि समाज उन्नति कर सके।

भक्त जी का जीवन सादा सरल निराभिमानी और पर पीड़ा समझने वाला था। उनके जैसी विभूति मिलना बड़ा कठिन है। निम्न पंक्ति उनके लिए हैं–

न स्वयं से सन्तुष्ट अलमस्त फकीर खोजता हूँ।
भक्त जी जैसे धर्मपरायण, परोपकारी, मैं आदमीयांत में खोजता हूँ।।

संदर्भ

1. यादव, के.सी. (2013). हरियाणा का इतिहास, होप इण्डिया पब्लिकेशन गुड़गांव, (2) 507, 512, 514.
2. विद्यामार्तण्ड, वि. (1996). श्री भक्त फूल सिंह का जीवन चरित्र, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक, (4) 65–70.
3. सिंह, आर. (1976). हरियाणा के आर्य समाज का इतिहास, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ रोहतक, (1) 33–37.
4. रानी आर. (2017). भक्त फूल सिंह सामाजिक योगदान व बलिदान, International Journal of Research, 4(14), 1747–1748, 1751–1752
5. साक्षात्कार, सुश्री साहबकौर पूर्व प्राचार्या, कन्या गुरूकुल महिला विश्वविद्यालय खानपुर कलां, 07.03.2018.
6. शास्त्री वी. (2005). कर्मयोगी चौ. प्रियव्रत अभिनन्दन ग्रंथ, चौ. प्रियव्रत अभिनन्दन समिति दयानन्दमठ रोहतक, (1) 26.